"महाबलिपुरम् के रथ"

Mandip kumar chaurasiya

Assistant professor(Guest)

Dept. of A.I.H. & Archaeology

Patna university, patna-800005

B.A. – 2nd Year

Paper – III (Indian Art, Architecture and Archaeology)

महाबलिपुरम् के रथ चिंगलपेट में स्थित है| इनका निर्माण सन् 630 से 678 ई० के बीच किया गया था| इन रथों के निर्माण का श्रेय नरसिंहवर्मन मामल्ल को दिया जाता है| नरसिंहवर्मन मामल्ल द्वारा निर्मित रथों के साथ मामल्ल स्थापत्य शैली के द्वितीय चरण का सूत्रपात होता है|

मंडपों के भांति इन रथों का निर्माण भी चट्टान को काट कर खोखला बनाकर किया गया है, किन्तु दोनों की निर्माण पद्धति में पर्याप्त अंतर है| मंडप चट्टान को खोदकर बनाये गए हैं, जबकि रथ एकाश्म है| ये आग्नेय चट्टान के बने है तथा किसी प्राचीन संरचनात्मक भवन के अनुकरण है| महाबलीपुरम के इन रथों की निर्माण-पद्धति

काष्ठशिल्प से प्रभावित दिखलाई पड़ती हैं| रथों के भीतर आग्नेय चट्टान के शहतीर, बल्ले तथा बड़ेरी से इनकी पुष्टि होती हैं| सामान्य आकार के इन रथों की संख्या आठ हैं| इनमे द्रौपदी रथ के अतिरिक्त अन्य सात रथों की निर्माण योजना चैत्यों एवं बिहारों के सदृश्य हैं| इसीलिए ये सप्त पैगोडा के नाम से भी विख्यात हैं| इन सप्त रथों में धर्मराज-रथ, भीम-रथ, अर्जुन-रथ तथा सहदेव-रथ का निर्माण आग्नेय पर्वत के दक्षिणी छोर पर किया गया है तथा गणेश-रथ उत्तरी छोर पर निर्मित हैं| इसके अलावे वलैयन कुट्टई-रथ और पिदरी-रथ पर्वत के उत्तरी छोर पर स्थित है| लेकिन ये वास्तुकला की दृष्टी से उतने विशेष महत्व के नहीं है|

इन रथों में सबसे बड़ा रथ धर्मराज-रथ हैं| इसकी योजना वर्गाकार है| इसकी लम्बाई 42 फूट, चौड़ाई 35 फूट तथा उचाई 50 फूट है| देखने से इसकी निर्माण योजना बौद्ध बिहारों से प्रभावित है| धर्मराज रथ में अभिलेख है, जिसमे कई व्यक्तियों के नाम है| इसी अभिलेख में धर्मराज-रथ को '<u>अत्यंत काम परमेश्वरगृहम</u>' की संज्ञा से अभिहित किया गया है| धर्मराज-रथ का आधार भाग अलंकृत है, शिखर आठपहलदार है| इसमें दिक्पाल और शिव के रूपों का चित्रण है|

बौद्ध चैत्य पद्धति पर निर्मित सहदेव-रथ, भीम-रथ तथा गणेश-रथ की स्थापत्य-शैली भी उत्कृष्ट कोटि का है| इन आयताकार रथों में दो या दो से अधिक मंजिलों की योजना है| इनकी छत पोपे की भांति

खोखली है और उपरी भाग जहाज की पेंदी जैसा हैं, जिनका शीर्ष भाग तिकोना हैं| भीम रथ स्तम्भयुक्त खुला मंडप के सदृश्य है| इन तीनो रथों में गणेश-रथ की बनावट विशिष्ठ है| इसमें भीम और सहदेव इन दोनों रथों का समावेश है| अंतर केवल इतना है कि गणेश-रथ का प्रवेशद्वार स्तम्भयुक्त मंडप में खुलता है|

मामल्ल-शैली के रथों में द्रौपदी रथ का आकार सबसे छोटा है| यह पूर्णतया निर्मित है| इसकी बनावट तम्बू के सदृश है, अनुमान है कि इसे शोभायात्रा के प्रतिक-स्वरूप बनाया गया होगा| अलंकरण का सर्वथा आभाव ही इस रथ की विशेषता है, किन्तु स्थापत्य-नवीनता के कारण अपने समूह के रथों से यह द्रौपदी-रथ पृथक श्रेणी का दीखता है, इसके आधार-भाग में सिंह एवं गज की आकृतियाँ पर्यायक्रम से नियोजित है| इनको इतनी निपुणता से अंकित किया गया है, मानों वे रथ का भार ग्रहण कर रहे हों| भारतीय स्थापत्य-कला में इतना सजीव चित्रण अन्यत्र दुर्लभ है|

मामल्लपुरम् के एकाश्मक एवं चट्टानों को खोदकर बनाये गये भवनों का निर्माण पूर्णतया नहीं हो सका| संभव है सन 647 ई० के लगभग नरसिंह मामल्ल् की मृत्यु के कारण ही मामल्ल् स्थापत्य शैली का अंत हो गया|

Fig- 1. धर्मराज-रथ

Fig- 2. गणेश-रथ